International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 09
August 2017

युग प्रवर्तक प्रेमचंद

डा0 आशा रानी तदर्थ अध्यापक (Adhoc), हिन्दी विभाग, टीकराम गर्ल्ज कॉलेज, सोनीपत, हरियाणा।

हिन्दी के युगाान्तर साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कथाकार मुंशी प्रेमचंद युग–निर्माता, युग प्रवर्तक साहित्यकार हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में कथाकार के रूप में इनका आगमन एक ऐतिहासिक महत्व रखता है। कबीर, तुलसी और भारतेन्दु के बाद ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में प्रेमचंद का ही नाम आता है। हिन्दी साहित्य का बीसवीं शताब्दी में बहुत विकास हुआ। बीसवीं सदी के विश्व साहित्य पर विचार करते हुए तीन टीम लेखकों के नाम एक साथ लिये जायेंगे– रूस के मैक्सिम गोर्की, चीन के लू शुन, और भारत के प्रेमचंद। संयोग से इन तीनों लेखकों का निधन 1936 में हुआ। तीनों मुख्यतः कथाकार थे और तीनों में यह समानता है कि उन्होनें अपने देश की जनता की मुक्ति के लिए अपनी साहित्यिक प्रतिभा का प्रयोग किया।''

''इनके पूर्व हिंदी–कथा साहित्य रहस्य, रोमांच, जासूसी और तिलस्म की दुनिया में खोकर रह गया था। मनोरंजन ही उसका एकमात्र लक्ष्य रह गया था। प्रेमचंद ने आते ही हिंदी–कथा साहित्य को जीवन के साथ जोड़ा और उसमें जीवन के बुनियादी सवालों को उठाया। उन्होंने देश के नब्ज पहचानी और अपनी कहानियों उपन्यासों में दलितों, पीड़ितों, वंचितों, किसानों और खेतिहर मजदूरों से लेकर गाँवो की अनपढ़ गंवार औरतों, विधवाओं और वेश्याओं तक की पीड़ाओं और उनकी समस्याओं को उठाया। मानव जीवन के चित्रण को ही अपने कथा साहित्य में प्रमुख स्थान दिया। साहित्य को जनता के निकट लाकर प्रेमचंद जी ने एक ऐसा कार्य किया जो हिन्दी साहित्य का दस्तावेज बन गया। भारतीय कथा साहित्य में उन्होंने क्रांतिकारी पथ प्रशस्त किया। उनके जीवनकाल में कोई विरोधी, आत्मनिष्ठ, व्यक्तिवादी परम्परा, हिन्दी कथा साहित्य में पनप न सकी''

छोटे–बड़े बहुत साहित्यकार थे। किंतु इतना सब होते हुए भी प्रेमचंद के कंधों से अधिक कोई हिन्दी साहित्यकार नहीं पहुँच पाया।

''वह एक युग निर्माता साहित्यकार थे। केवल साहित्य में युग को नाम देने वाले नहीं बल्कि अपने समय के सामाजिक जीवन को एक नई गति और नई दिशा प्रदान करने वाले।''[3] ''अमर कथा साहित्य की रचना के साथ–साथ उन्होनें युग–जीवन के सब पक्षों को स्पर्श किया। 'युग चेतन' को प्रबद्ध करने के लिये 'जागरण' निकाला। भारतीय भाषाओं के साहित्य को एक दूसरे से परिचित कराने के लिए हंस, का प्रकाशन किया। स्वतंत्रता संग्राम में योगदान किया और प्रगतिशील आन्दोलन प्रारम्भ किया।''[4] वे कहते हैं कि– 'कविता एकांत में लिखी जा सकती है'। घास, फूस, तारे, निर्झर, नदी आदि भी कवि को गंभीर अनुमति दे सकते हैं। परन्तु

कथाकार जीवन के कोलाहल भरे मेले में शामिल होकर अपने आपको भीड़ का अंग नहीं बना लेता, तब तक कहानी नहीं लिख सकता।''[5]

साहित्यकार को दलित, पीड़ित और वंचित का पक्षधर होना चाहिए। सच्चा साहित्य व्यक्ति और समुदाय दोनों के लिए उपयोगी होता है। प्रेमचंद का साहित्य ऐसा ही साहित्य है। वे जनता के कथाकार हैं, उस हिन्दुस्तानी जनता के जो गांव में रहती है, जीवन भर कमरतोड़ मेहनत करती है। कर्ज के बोझ से लदी होती है और गरीबी की चक्की में पिसी जाती है। क्योंकि गरीबी को उन्होंने नजदीक से देखा था। गांधीजी की पुकार पर उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी और जीवन की अंतिम घड़ियों तक कशमकश और संघर्ष का जीवन बिताया।

प्रेमचंद ने एक ऐसे संक्रमणशील काल में अपना जीवन बिताया जब आधुनिक जनतांत्रिक मूल्यों के साथ भारत को एक आधुनिक राष्ट्र की सकल दी जा रही थी। आचार्य द्विवेदी जी ने अपने इतिहास ग्रंथ में लिखा है कि– ''वे दरिद्रता में जन्में, दरिद्रता में पले और दरिद्रता में जुझते–जुझते समाप्त हो गये। फिर भी वे अपने जीवनकाल में समस्त उत्तर भारत के सर्वश्रेष्ठ कथाकार बन गये''[8]

शर्मा जी का भी कहना है कि– प्रेमचंद जी का साहित्य बीसवीं सदी के हिन्दुस्तान का सच्चा इतिहास है। हमारी जनता की सहृदयता, सहनशीलता और वीरता उनकी रचनाओं में फूल की तरह खिली हुई है।

'सेवा सदन' से 'गोदान' तक उन्होंने कथा साहित्य में यथार्थवाद और आदर्शवाद इस तरह विकसित किया, जिस तरह एक ही साहित्यकार बहुत कम पर पाता है। अपने यथार्थवाद से उन्होंने हिन्दी कथा साहित्य के लिए वह राजमार्ग बना दिया जिस पर नई पीढ़ी क`लेखक निर्भय होकर आगे बढ़ सकते हैं।

उन्होंने '**प्रगतिशील लेखक संघ**' के प्रथम अधिवेशन में लखनऊ में सभापति पद से भाषण देते हुए साहित्यकार के सम्बन्ध में कहा था कि ''वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भ नहीं है, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।''

कथाकार प्रेमचंद एक ऐसी ही सच्चाई थे, देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं। उन्होंने अपनी और उपन्यासों द्वारा अपने समय की राजनीतिक जीवन को एक नई गति एवं एक नई दिशा दी। वे निरंतर अपने को युग के अनुरूप ढ़ालते गये। जब उर्दू में नबाब राय के नाम से लिख रहे थे, तब भी और उस समय भी जब वे हिन्दी में प्रेमचंद के नाम से लिखने लगे थे।

कथाकार प्रेमचंद गांधीयुगीन आदर्शों से भी प्रभावित थे और आगे चलकर मार्क्सवादी विचारों के प्रबल समर्थक बने। उन्होंने ऐसे औपन्यासिक पात्रों और ऐसे कहानियों की सृष्टि की जो पूर्णतः गांधीवादी है। किंतु यह भी उतना ही सत्य है कि उन्होंने लेखन का ऐसा महत्वपूर्ण दौर लाया जिस पर प्रगतिशील विचारधारा की स्पष्ट छाप है, बड़ी स्पष्ट है।

प्रेमचंद मुख्यतः ग्रामीण जीवन के कथाकार है। इनके कथा साहित्य में ग्राम्य जीवन अपने संपूर्णता में चित्रित हुआ है।

''हंस' के जुलाई 1938 के अंक में निराला जी ने अपने प्रकाशित लेख हिन्दी साहित्य में उपन्यास, शीर्षक लेख में प्रेमचंद को हिन्दी का सबसे बड़ा औपन्यासिक, संज्ञा से विभूषित करते हुए लिखा है कि – प्रेमचंद जी ने ग्राम्य चित्रों की खींचने तथा मनुष्य–मन की छानबीन करने में असाधारण सफलता प्राप्त की है।''[8]

इनकी यह मान्यता थी कि भारत की आत्मा गाँवों में है। उनके युग में शहरी जीवन का जिस रूप में विकास हो रहा था, उससे वे सशंकित थे, पर उन्होंने नगरों के जीवन को भी अनदेखा नहीं किया। इसलिए उन्होंने 'गोदान' में ग्रामीण कथा के साथ–साथ शहरी कथा का भी समन्वय किया। प्रेमचंद ने ग्राम्य–जीवन को कभी अप्रभामंडित नहीं किया, बल्कि उसकी विषमताओं हीन अवस्थाओं, दुःखों, विपन्नताओं और महाजनी शोषणों को गहराई से देखा और अपने कथा साहित्य में वास्तविक रूप को चित्रित किया। उनकी कहानियाँ ''सवा सेर गेहूँ, पूस की रात, कफन आदि तथा उनके उपन्यास 'रंगभूमि' और 'गोदान' उनकी इस जीवन सृष्टि को हमारे सामने स्पष्ट रूप में रखते हैं। उन्होंने अपने कथा–साहित्य को जीवन–जगत की वास्तविकता पर खड़ा किया और उसे मानवेत्तर के बजाय मानवीय बनाया डॉ. नरेन्द्र मोहन के विचार द्रष्टव्य– ''वे पहले कलाकार थे, जिन्होंने 'महान' के बजाय 'लघु' को, असाधारण के बजाय साधारण को, अपने साहित्य में प्रतिष्ठित किया।'' उनकी कृतियाँ चाहे उपन्यास हो या कहानियाँ नायक सम्बन्धी परम्परागत धारणा को अमान्य सिद्ध करती है। होरी, गोबर, सूरदास, सुमन, रमानाथ, कादिर, अलगू, घीस, माधव, जोखू, बुधिया, सिलियों, सनीचरी आदि नाम प्रेमचंद की इस नई धारणा को ही व्यक्त करते हैं।

अपने प्रथम उपन्यास 'सेवासदन' से 'गोदान' तथा अधूरे उपन्यास 'मंगल सूत्र' तक प्रेमचन्द निरन्तर एक जागरूक लेखक का दायित्व संभालते रहे। हिन्दी में आने के पूर्व उर्दू में वे अपनी कलम माँज चुके थे।

वेश्या जीवन पर आधारित 'सेवासदन' जमींदार विरोधी संघर्ष तथा प्रथम महायुद्ध से उत्पन्न समस्या पर आधारित 'प्रेमाश्रय', नारी–समस्या पर आधारित निर्मला, नारी के आभूषण प्रेम एवं स्वतंत्रता–संग्राम पर आधारित 'गबन', जमींदार और किसान संघर्ष पर आधारित 'कायाकल्प'।

अपने उपन्यासों की तरह प्रेमचंद ने अपने कहानियों में भी अधिकतर आम आदमी की जिंदगी को विशेषकर ग्रामीण मजदूरों और किसानों की जिन्दगी को महत्व दिया।

इनकी कहानियों का विकास स्तर तीन दौर में है। प्रारंभिक दौर सन् 1907 से 1920 के बीच का है। पहली कहानी 1907 में प्रकाशित हुई। प्रेमचंद की कहानियों का दूसरा दौर 1920–1930 के बीच रचित कहानियों का है। इस युग की कहानियों में प्रमुख है– 'शतरंज के खिलाड़ी', 'शंखनाद', 'मुक्ति मार्ग', 'सवासेर गेहूँ', 'आत्माराम'।

इस युग की अधिकतर कहानियों स्वाधीनता आन्दोलन के विविध पक्षों को उजागर करती है। इन कहानियों पर गांधी जी का सीधा प्रभावा देखा जा सकता है।

प्रेमचंद की कहानियों का तीसरा दौर 1930–1936 तक के बीच की कहानियों का है। इन कहानियों में प्रमुख है– 'पूस की रात', 'कफन', 'नशा', 'कुसुम' ये कहानियाँ विश्वास और आस्थाओं के टूटने की कहानियाँ है। इस टूटन के परिणामस्वरूप ये कहानियाँ करूणत्राासद में लिपटी हुई है।

प्रेमचंद की पहली कहानी 'दुनिया का अनमोल रत्न' से लेकर उनकी आखिरी दौर की कहानियाँ तक वे निरंतर विकास की प्रक्रियाओं में से गुजरते गये। इनकी कहानियों ने मंगलमय क्षितिज की ओर संकेत किया। प्रेमचंद का विश्वास था कि– ''ऐसी कहानी, जिसमें जीवन के किसी अंग पर प्रकाश न पड़ता हो, जो सामाजिक रूढ़ियों की तीव्र आलोचना न करती हो, जो मनुष्य के सद्भावों को दृढ़ न करे या जो मनुष्य में कौतूहल का भाव न जागृत करे कहानी नहीं।'' किंतु उन्होंने मनुष्य को जगाया है। सच्चा साहित्यकार मानवता का पथ प्रदर्शक होता है। वह हमारे मनुष्यत्व को जगाता है, इसमें सद्भावों संचार करता है, हमारी दृष्टि को फैलाता है।

अपनी पूरी लम्बी कहानी यात्रा में प्रेमचंद जी स्वाधीनता के प्रति अपनी अवधारणा के दृष्टि को ही व्यक्त करते रहे। साथ ही सामाजिक और राजनीतिक चेतना से प्रभावित होते हुए सामान्य जन के जीवन को बेहतर बनाने की प्रक्रिया में वे सतत् प्रयत्नशील रहे। स्वराज्य के प्रति संघर्ष और सामान्य प्रतिष्ठा इनकी समूची कहानी यात्रा ध्रुवान्त है।

हिन्दी कथा साहित्य के गौरवशिल्प प्रेमचंद आधुनिक युग के विश्व के श्रेष्ठ लेखकों में एक है। इनका कथा–साहित्य व्यापक विस्तार और अगाध गहराई लिए हुए है। गोस्वामी तुलसीदास जी बाद हिन्दी का दूसरा लोकप्रिय और जनता का साहित्यका है तो वह प्रेमचंद है। इनके कथा साहित्य में झोपड़ियों से लेकर महलों तक, गाँवों से लेकर नगरों तक, पाठशालाओं से लेकर कॉलेजों तक, खेत–खलिहानों से लेकर कारखानों तक, खोंमचोंवालों से लेकर बैंकों का दृश्य बड़ी सच्चाई से देखने को मिला। आचार्य द्विवेदी के मंतव्य देखें– समस्त दुःख–सुख और सूझ–बूझ जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद के साहित्य की विकास–यात्रा को देखते हुए कह सकते हैं कि कथाकार प्रेमचंद एक पेड़ की तरह हैं जो बाहर से हवा–पानी लेता हुआ लगातार फलता–फूलता है और फूल की सुगंध और फूल का रस विहरित करता है।''

संदर्भ सूचीः

शीर्षक–

1. 'परम्परा आगे बढ़ रही है– 'प्रेमचंद जन्म शताब्दी 'परिचर्चा', साप्ताहिक हिन्दुस्तान विशेषांक पृष्ठ– 20, डा0 नामवर सिंह 27 जुलाई 1980
2. ''परम्परा अधिक पुष्ट हुई'' परिचर्चा–प्रेमचंद जन्म शताब्दी विशेषांक, साप्ताहिक हिन्दुस्तान 1980– डा0 शिवादान सिंह चौहान, विशेषांक 27 जुलाई 1980

3. ''प्रेमचंद और उनका युग'– डा0 रामविलास शर्मा
4. पुण्य– स्मरण हिन्दुस्तान प्रत्रिका 27 जुलाई 1980– महादेवी वर्मा, प्रेमचेद विशेषांक का जन्म शताब्दी
5. पुण्य– स्मरण–हिन्दुस्तान प्रत्रिका– 27 जुलाई 1980– प्रेमचंद जन्म शताब्दी, महादेवी वर्मा
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी
7. कुछ विचार– साहित्य का उद्देश्य प्रेमचंद, पृष्ठ–20
8. हंस 1930 के अंक में निराला जी के प्रकाशित लेख हिन्दी साहित्य के उपन्यास
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास– आचार्य हजारी प्र0 द्विवेदी